10. Q → Explain the nature and causes of unemployment in India. What step have been taken to solve the problem of unemployment ? Explain the role of NREP in its connection.

Ans :→ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत जिन समस्याओं से निपटने का प्रयास कर रहा है। उसमें बेरोजगारी की समस्या सबसे ज्वलंत है। ये समस्याएँ हर क्षेत्र में फैली हुई है। वास्तव में यह एक पुराना रोग है जो समय के गुजरने के साथ-साथ बिगड़ता जा रहा है। यह न केवल हमारे आर्थिक विकास के रास्ते में ही बाधक है बल्कि देश तथा राज्य के सामाजिक तथा राजनीतिक स्थायित्व के लिए भयानक चुनौती भी है। यह सामाजिक शान्ति तथा सुरक्षा के लिए एक खतरा है।

बेरोजगारी का अर्थ होता है काम अथवा रोजगार चाहने वाले व्यक्तियों को कार्यक्षमता और इच्छा रहने पर भी रोजगार नहीं मिल पाना। भारत में बेरोजगारी शहर एवं गाँव दोनों क्षेत्रों में पायी जाती है। गाँवों में दो प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है (i) मौसमी बेरोजगारी (ii) छिपी हुई बेरोजगारी।

हमारे देश तथा राज्य में अधिकांश लोग इसलिए बेरोजगार है क्योंकि यहाँ का प्रमुख धंधा कृषि है। कृषि मौसमी पेशा है। जब तक कृषि कार्य होता है लोग रोजगार में रहते है और ज्योंही कृषि कार्य बंद होता है लोग बेरोजगार हो जाते है। इसी प्रकार कृषि में जितने श्रमिकों की आवश्यकता होती है। उससे बहुत अधिक श्रमिक कार्य करने में लगे होते है। इस अतिरिक्त श्रमिकों को सीमान्त उत्पादकता नगण्य अथवा शून्य होती है। वास्तव में ये छिपे हुए बेरोजगार है।

शहरों में भी दो प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है। (i) श्रमिक वर्ग की बेरोजगारी और (ii) शिक्षित वर्ग की बेरोजगारी या मध्यम वर्ग की बेरोजगारी। अग्रलिखित तालिका से भारत में बेरोजगारी का अनुमान लगाया जा सकता

तालिका (2) से स्पष्ट है कि शिक्षित बेरोजगारों की संख्या 1971 1984 के बीच 23 लाख से बढ़कर 167.4 लाख हो गयी। इन आकड़ो से यह भी स्पष्ट होता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षितों में बेरोजगारी की मात्रा न केवल कुल रूप में बल्कि सापेक्ष रूप में बढ़ी है। मैट्रिक और हायर सेकेण्ड्री के पश्चात् नौकरी न मिलने के कारण लोग ग्रेजुएट बनना चाहते है। बेरोजगारों का तीन चौथाई भाग ऐसे परिवारों में है जिनकी आय 200 रुपये प्रति माह से कम है। अर्थात् गरीब परिवारों में बेरोजगारी अधिक है। उच्च आय वर्ग अपने परिवार के सदस्यों के लिए नौकरी का प्रबन्ध कर लेते है।

भगवती समिति द्वारा 1971 के लिए बेरोजगार व्यक्तियों के लिए रोजगार प्राप्त करने से पहले प्रतीक्षा की अवधि के बारे में आकड़े दिये गये। आकड़ो से पता चलता है कि पुरुष स्नातक को नौकरी प्राप्त करने के लिए औसत 13 महीने प्रतीक्षा करनी है। जबकि स्त्री स्नातक 14 महीने। मानवशास्त्र में 16 महीने तथा इंजीनियरिंग स्नातक को 11 महीने नौकरी के लिए इन्तजार करना पड़ता है। स्नातकोत्तर और पी० एच० डी० की डिग्री प्राप्तकर्ताओं को भी 12 महीने से अधिक समय तक इन्तजार करना पड़ता है।

बेरोजगारी के कारण :— हमारे देश में बढ़ती हुई बेरोजगारी का कोई एक कारण नही बल्कि कई कारण है। हमारे देश में एवं राज्यों में जनसंख्या तथा श्रमशक्ति में काफी वृद्धि हुई है। लेकिन इसके अनुपात में उद्योगों तथा कृषि में रोजगार के अवसर उत्पन्न किए नही जा सकते है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देश ~~देशों~~ में जनसंख्या 35 करोड के लगभग थी जो अब बढ़कर 85 करोड हो गयी है। साथ ही जनसंख्या वृद्धि की दर भी काफी रही है। इससे प्रत्येक बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए रोजगार उपलब्ध कराना कठिन हो गया है।

दूसरी बात यह है कि हमारे देश में कुल जनसंख्या का 76% भाग गावों में रहता है। चूँकि

तालिका (2) से स्पष्ट है कि शिक्षित बेरोजगारों की संख्या १९७१ ~~से~~ १९८१ के बीच २.३ लाख से बढ़कर १६७.४ लाख हो गयी। इन आकड़ो से यह भी स्पष्ट होता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षितों में बेरोजगारी की मात्रा न केवल कुल रूप में बल्कि सापेक्ष रूप में बढ़ी है। मैट्रिक और हायर सेकेण्ड्री के पश्चात् नौकरी न मिलने के कारण लोग ग्रेजुएट बनना चाहते है। बेरोजगारों की तीन चौथाई भाग ऐसे परिवारों में है जिनकी आय २०० रुपये प्रति माह से कम है। अर्थात् गरीब परिवारों ~~स्तर~~ में बेरोजगारी अधिक है। उच्च आय वर्ग अपने परिवार के ~~सदस्य~~ सदस्यों के लिए नौकरी का प्रबन्ध कर लेते है।

भगवती समिति द्वारा १९७१ के लिए बेरोजगार व्यक्तियों के लिए रोजगार प्राप्त करने से पहले प्रतीक्षा की अवधि के बारे में आकड़े दिये गये। आकड़ो से पता चलता है कि पुरुष स्नातक को नौकरी प्राप्त करने के लिए औसत 13 महीने प्रतीक्षा करनी है। जबकि स्त्री स्नातक 14 महीने। मानवशास्त्र में 16 महीने तथा इंजीनियरिंग स्नातक को 11 महीने नौकरी के लिए इन्तजार करना पड़ता है। स्नातकोत्तर और पी० एच० डी० की डिग्री प्राप्तकर्ताओं को भी 12 महीने से अधिक समय तक इन्तजार करना पड़ता है।

~~बे~~**बेरोजगारी के कारण** :— हमारे देश में बढ़ती हुई बेरोजगारी का कोई एक कारण नही बल्कि कई कारण है। हमारे देश में एवं राज्यों में जनसंख्या तथा श्रमशक्ति में काफी वृद्धि हुई है। लेकिन इसके अनुपात में उद्योगों तथा कृषि में रोजगार के अवसर उत्पन्न किए नही जा सकते है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देश ~~देशों~~ में जनसंख्या 35 करोड़ के लगभग थी जो अब बढ़कर 85 करोड़ हो गयी है। साथ ही जनसंख्या वृद्धि की दर भी काफी रही है। इससे प्रत्येक बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए रोजगार उपलब्ध कराना कठिन हो गया है।

दूसरी बात यह है कि हमारे देश में कुल जनसंख्या का 76% भाग गावों में रहता है। चूँकि